29785

[This question paper contains 2 printed pages.]

Shyama Prasad Mukherji College LIBRARY New Delhi

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 785 B

Unique Paper Code : 12051201

Name of the Paper : Hindi Sahitya ka Itihas (Aadikal Aur Madhyakal)

Name of the Course : B.A. (H) Hindi – CBCS

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा

हिंदी साहित्य के काल विभाजन एवं नामकरण पर प्रकाश डालिए।

2. आदिकाल के राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर विचार कीजिए। (15)

P.T.O.

अथवा

आदिकालीन साहित्य के सिंह और नाथ साहित्य की विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

3. रामं भक्ति काव्य की प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

भक्ति आंदोलन के अखिल भारतीय स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

4. रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त का आशय स्पष्ट करते हुए रीतिकाल की सामान्य प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए। (15)

अथवा

रीतिकालीन सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए - (5+5+5)

(i) संत काव्य धारा

(ii) रीतिकालीन वीर काव्य

(iii) कृष्ण भक्ति साहित्य

(iv) रासो साहित्य

(v) सूरदास

6

[This question paper contains 4 printed pages.]

Shyama Prasad Mukherji College LIBRARY New Delhi

**Your Roll No.....**

**B**

**Sr. No. of Question Paper : 808**

Unique Paper Code : 12051202

Name of the Paper : Hindi Kavita (Ritikaleen Kavita) हिंदी कविता (रीतिकालीन काव्य)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS (LOCF)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. केशव रचित 'रामचंद्रिका' की काव्य-भाषा का विवेचन कीजिए।

**अथवा**

वर्तमान संदर्भ में रहीम के दोहों की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (12)

2. 'बिहारी ने अपने दोहों में श्गागर में सागर भर दिया है।' कथन का विश्लेषण कीजिए।

P.T.O.

अथवा

बिहारी के दोहों के शिल्प-सौन्दर्य पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (12)

3. घनानंद की कविता के भाव-सौंदर्य का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

अथवा

घनानंद के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिए। (12)

4. भूषण की काव्य-भाषा का विवेचन कीजिए।

अथवा

गिरिधर कविराय के काव्य में व्यंजित नैतिक-मूल्यों की समीक्षा कीजिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) बहु बाग तड़ाग तरंगिनी तीर तमाल की छाँह बिलोकि भली।
घटिका इक बैठत हैं सुख पाइ बिछाइ तहाँ कुस काँस थली।
मग को श्रम श्रीपति दूर करैं सिय को, सुभ बाकल अंचल सों।
श्रम तेऊ हरैं तिनको कहि 'केसव' चंचल चारु दृगंचल सों।

अथवा

जो रहीम दीपक दसा, तिय राखत पट ओट।
समय परे तें होत है, वाही पट की चोट।।
पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन। (8)

(ख) जब जब वै सुधि कीजियै, तब-तब सब सुधि जाँहि।
आँखिनु आँखि लगीं रहैं, आँखें लागति नाँहि।।
उन हरकी हँसी कै, इतै इन सौंपी मुसकाइ।
नैन मिलै मन मिलि गए, दोऊ मिलबत गाइ।।

**अथवा**

बंक बिसाल रँगीले रसाल छबीले कटाछ-कलानि मैं पंडित।
साँवल सेत निकाई-निकेत हियौ हरि लेत हैं आरस-मंडित।
बेधि के प्रान करैं फिरि दान सुजान खरे भरे नेह अखंडित।
आनंद-आसव-घूमरे नैन मनोज के चोजनि ओज प्रचंडित।।

(7)

6. दिये गये निर्देशों के आधार पर किन्हीं दो अवतरणों का रचना-कौशल (लगभग 150 शब्दों में) उद्घाटित कीजिए :

(क) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।
रहिमन पैंड़ा प्रेम को, निपट सिलसिली गैल।
बिछलत पाँव पिपीलिका, लोग लदावत बैल।।

**(नीति-सौंदर्य)**

P.T.O.

(ग) बेद राखे बिदित पुरान पर सिद्ध राखे राम-नाम राख्यो अति रसना सुघर में।

हिंदुन की चोटी रोटी राखि राखी है सिपाहिन की काँधे में जनेऊ राख्यो माला रखी गर में।

मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे पातसाह बैरी पीसि राखे वरदान राख्यो कर में।

राजन की हद्द राखी तेगबल सिवराज देव राखे देवल स्वधर्म राख्यों घर में।। (भाव-सौंदर्य)

पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम
दोनो हाथ उलीचिए, यही सयानो काम
यही सयानो काम, राम को सुमिरण कीजै
पर-स्वारथ के काज, सीस आगे धरि दीजै
कह गिरिधर कविराय, बड़े की याही बानी
चलिए चाल सुचाल, राखिए अपनो पानी।। (नैतिक-मूल्य)

रूपनिधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग-छकी मति लाज के साज-समाज बिसारे।
एक अचंभौ घनानंद हैं नित ही पल-पाट उघारे।
टारें टरैं नहिं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन-मोह के तारे।।
(शिल्प-सौंदर्य)

(6+6=12)

(3500)